ग्रामीण भारत

जनपद आगरा द्वारा प्रकाशित मासिक समाचार पत्रिका

वेब साइट http://agra.nic.in पर भी उपलब्ध

जिला ग्राम्य विकास अभिकरण, आगरा द्वारा प्रकाशित वर्ष-2 अंक-2 निःशुल्क फरवरी, 2007

मुख्य विकास अधिकारी द्वारा श्रमदान घोषित

आदर्श जलाशय योजना की कार्य योजना में विकास खण्ड शमशाबाद में 3 तालाब ग्राम गढ़ी धर्मजीत, ग्राम लहरा एवं ग्राम सूरजपुरा में क्रम संख्या 13, 14 एवं 15 पर प्रस्तावित थे। विकास खण्ड को अभी मात्र 09 तालाबों के निर्माण के लिए धनराशि अवमुक्त हुई थी इस कारण से इन तालाबों के निर्माण के लिए कोई कार्यादेश खण्ड विकास अधिकारी द्वारा जारी नहीं किया गया था। किसी ठेकेदार द्वारा तीनों तालाबों पर कार्य प्रारम्भ करा दिया गया। इसकी शिकायत कनिष्ठ उपप्रमुख, शमशाबाद द्वारा मुख्य विकास अधिकारी से की गयी। मुख्य विकास अधिकारी श्री एस.के. सिंह द्वारा तुरन्त इनकी जाँच के आदेश दिये गये। जॉच में स्पष्ट हुआ कि इन तालाबों के लिए अभी खण्ड विकास अधिकारी द्वारा कोई कार्यादेश जारी नहीं किया गया है एवं समस्त कार्य ट्रैक्टर से सम्पादित करवाये गये हैं। श्री सिंह द्वारा इस पर कड़ा रूख़ अपनाते हुए तीनों कार्यों को श्रमदान घोषित कर दिया गया।

मुख्य विकास अधिकारी, श्री एस.के. सिंह अपने इस संकल्प पर दृढ़ हैं कि यदि कोई कार्य ट्रैक्टर से करवाया जायेगा तो उसे तुरन्त श्रमदान घोषित कर दिया जायेगा तथा किसी सरकारी कर्मी की संलिप्तता की दशा में उसके विरुद्ध भी कड़ी कार्यवाही की जायेगी।

लगातार सम्पन्न होते सरस मेले

स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोज़गार योजना अन्तर्गत उत्पादित माल की बिक्री के लिए प्रत्येक जनपद पर सरस शोरूम खोले जा रहे हैं तथा शासन के प्रयासों से लगातार सरस मेले भी आयोजित किये जाते हैं। इन मेलों में एस.जी.एस.वाई. अन्तर्गत ऋण दिलवाये गये स्वंय सहायता समूहों के स्वरोजगारियों को उनके आने–जाने का खर्चा, सामान ले जाने का खर्चा तथा प्रत्येक सदस्य को प्रतिदिन 50 रू0 का मानदेय भोजन आदि के लिए जिला ग्राम्य विकास अभिकरण द्वारा दिया जाता है।

पिछले दिनों अर्ध कुम्भ मेला, इलाहाबाद में सरस मेले का आयोजन दिनांक 11.01.2007 से 26.01.2007 तक किया गया। इस मेले में इन्दिरा स्वंय सहायता समूह नगला पद्मा, बरौली अहीर के 2 स्वरोज़गारियों द्वारा भाग लिया गया। यह समूह अपने साथ अपने द्वारा बनाये गये जूते एवं चमड़े की बेल्ट लेकर गया था। समूह के लगभग 26,000 रू0 मूल्य के सामान में से 18696 रू0 के जूतों एवं बेल्टों की बिक्री हुई , इसके अतिरिक्त लगभग 4,638 रू0 के आभूषणों की बिक्री भी समूह द्वारा करके लगभग 4,000 रू0 की आय की गयी।

अर्ध कुम्भ मेला इलाहाबाद में लगा आगरा का स्टाल।

इसी प्रकार दिनांक 16.01.2007 से 30.01.2007तक झारखण्ड की राजधानी राँची में एक सरस मेले का आयोजन हुआ था जिसमें जनपद से अम्बेडकर स्वंय सहायता समूह नौबरी विकास खण्ड बरौली अहीर द्वारा भाग लिया गया था। इस समूह ने लगभग 15,000 रू0 के जूते की बिक्री करके लगभग 3,000 रू0 का लाभ कमाया। इस समूह को 2,50,000 रू0 का ऋण स्वीकृत हो चुका है।

इससे पूर्व दिनांक 22.12.2006 से 02.01.2007 तक गोवा में सरस मेले का आयोजन हुआ था।

दिनांक 17.02.2007 से 26.02.2007 तक लखनऊ में क्षेत्रीय सरस मेला, लक्ष्मण मेला ग्राउन्ड, बोट

(शेष पृष्ठ 4 पर)

भूमि सेना योजना में जल भराव क्षेत्रों का उपचार

मृदा एक जीवित वस्तु के समान है क्योंकि पेड़, पौधे घास, फसलें, जीव–जन्तु तथा सूक्ष्म जन्तु इसके विभिन्न अंग हैं। पानी की कमी व अधिकता दोनों ही इसके लिए हानिकारक हैं। जब पानी की अधिकता पौधों के जड़ क्षेत्र में हवा को निकाल या कम कर देती है तो हवा पानी का सन्तुलन बिगड़ जाता है। यह सन्तुलन जलक्रान्ता समस्या को जन्म देता है। जलक्रान्ता भूमि कृषि के अयोग्य होती है क्योंकि जड़ क्षेत्र में वायु संचार की कमी होने से पौधे मर जाते हैं या उनकी वृद्धि कम होती है। अतः ऐसी भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिए जल निकास अत्यन्त आवश्यक है।

भूमि सेना योजना वर्ष 2006–07 के अन्तर्गत भूमि संरक्षण इकाई, टूण्डला, स्थान आगरा द्वारा जनपद के विकास खण्ड एत्मादपुर एवं अछनेरा के निचले क्षेत्रों में वर्षा अपवाह के आकर इकट्ठा होने, अधोभूमि में सख़्त परत तथा अन्तः जल निकास कम होने वाली भूमि का 350 हैक्टेयर क्षेत्र चयनित कर उसके पृष्ठ जल निकास का कार्य इस

नाला खोदते भूमि सैनिक।

योजना के अन्तर्गत कराया जा रहा है। विकास खण्ड अछनेरा में बरौद, मुबारिकपुर तथा विकास खण्ड एत्मादपुर में अहारन, खरकना, न0 बारी खाँ एवं चूहरपुर लाभान्वित ग्राम हैं। इस कार्य से उचित जल निकास व्यवस्था होगी, जिससे मृदा में वायु संचार बढ़ने से बीजों का अंकुरण, जड़ों द्वारा पोषक तत्वों का अवशोषण तथा जड़ों की वृद्धि अधिक होगी। हानिकारक लवण भूमि की ऊपरी सतह पर एकत्र न होने से तथा भूमि में कार्बनडाईऑक्साइड़ की मात्रा न बढ़ने से मृदा की क्षारीयता एवं अम्लीयता से बचाव हो सकेगा।

भूमि सुधार कार्य से पूर्व परियोजना क्षेत्र के कृषक खरीफ में जल–भराव होने के कारण निरन्तर धान की पैदावार लेने के लिए मजबूर थे जो कम वर्षा होने से प्रभावित होती थी। अधिक वर्षा होने पर शस्य क्रियाऐं देरी से होने के कारण रवी में गेंहूँ की उन्नति प्रजातियों का प्रयोग न करना भी मजबूरी थी। साथ ही फसल–चक्र में बदलाव न होने के कारण निरन्तर पैदावार कम हो रही थी। अब कृषक समय पर शस्य क्रियाऐं कर उचित फसल–चक्र अपना सकेंगे, जिससे टिकाऊ खेती के साथ आच्छादन व उत्पादन में वृद्धि होगी। जल निकास के कार्य में नालों आदि खुदाई का कार्य परियोजना क्षेत्रों में चयनित भूमि सैनिकों द्वारा कराया जा रहा है, जिससे उन्हें गाँव में ही रोज़गार के अवसर भी प्राप्त हो रहे हैं।

ग्राम सभाओं में जागरूकता– सी.सी. ही करवायेंगे

सम्पूर्ण ग्रामीण रोज़गार योजनान्तर्गत ग्राम पंचायतों को वर्ष 1998–99 से एवं विगत कुछ वर्षो से राज्य वित्त एवं दशम वित्त योजनान्तर्गत धनराशि प्राप्त हो रही है। अधिकांशतः इस धनराशि से ग्रामों में खंरजा लगाने का कार्य ही सम्पन्न हुआ। काफी ग्रामों में यह स्थिति आ गयी कि पूरे गाँव खंरजों से संतृप्त हो गये। ग्रामवासियों के निरन्तर हो रहे जीवन–स्तर में सुधार से उनमें जागरूकता भी आयी है। वह ग्रामों में ही शहरों जैसी सुविधाओं की माँग

ग्राम पंचायत द्वारा सी.सी. से निर्मित सड़क।

करने लगे हैं। कुछ प्रधान भी खंरजे के स्थान पर अब सी.सी. कराने को प्राथमिकता देने लगे हैं। ऐसे ही एक प्रधान हैं विकास खण्ड बरौली अहीर की ग्राम पंचायत रोहता के प्रधान। अनुदान में मिली धनराशि से यह अधिकांशतः खंरजों के स्थान पर सी.सी. से सड़क बनवाने का कार्य कर रहे हैं।

इनके द्वारा नगला पद्मा में गत माह में ग्वालियर रोड़ से बरपुरा नाले तक 295 मी0 लम्बाई में नाली एवं सी.सी. से सड़क निर्माण का कार्य सम्पन्न कराया गया। कार्य पर कुल 5.27 लाख रू0 व्यय हुआ जिसमें से 4.81 लाख रू0 सामग्री पर एवं 0.46 लाख रू0 श्रमांश पर व्यय हुआ। सी.सी. से सड़क बनने से स्थानीय जनता काफी प्रसन्न है।

बंजर भूमि में आलू–आई.डब्ल्यू.डी.पी. का परिणाम

समेकित बंजर भूमि विकास कार्यक्रम (आई.डब्ल्यू.डी.पी.) अन्तर्गत परियोजना चतुर्थ में वर्ष 2004–05 में विकास खण्ड जगनेर के 12 ग्रामों का चयन किया गया था। इन ग्रामों में 5000 है0 में भूमि सुधार का कार्य भूमि संरक्षण अधिकारी, रामगंगा कमाण्ड द्वारा सम्पन्न सम्पन्न कराया जा रहा है। इन्हीं चयनित ग्रामों में एक ग्राम है चाचौंद न मानिक। यह ग्राम अरावली पर्वत श्रंखला के पठारी क्षेत्र में स्थित आगरा का एक दूरस्थ ग्राम है। यहाँ सामान्यतः जल स्तर 150 फीट से 200 फीट तक है वह भी काफी कम मात्रा में। उससे नीचे पत्थर होने के कारण और अधिक गहराई में जल श्रोत प्राप्त करने के लिए खुदाई अत्यधिक कठिन है। वर्तमान में उपलब्ध बोरिंगों से अधिकतम 2 घन्टे तक ही पानी उपलब्ध हो पाता है उसके बाद बोरिंग पानी देना बंद कर देती है। पुनः 3–4 घन्टे के विराम के बाद थोड़ा पानी फिर इकट्ठा होता है। पानी उपलब्ध न होने के कारण अधिकांश जगनेर क्षेत्र में पूरे वर्ष में मात्र एक फसल उत्पन्न होती है वह भी मात्र वर्षा पर आधारित है।

निर्मित जल संचयी बंधी का निरीक्षण करते अधिकारी गण।

गाँव में पहाड़ के बिल्कुल पास में लगभग 40 है0 भूमि बंजर अनुपयोगी पड़ी थी जिसमें कोई फसल उत्पन्न नहीं होती थी।परियोजना प्रारम्भ होने के बाद विगत दो वर्षों में इस गाँव में 324 मी0 जल संचयी बाँध एवं एक तालाब का निर्माण कराया गया। वर्ष 2006–07 में 840 मी0 जल संचयी बाँधों के निर्माण अब तक कराये जा चुके हैं। बंधी के निर्माण से जहाँ एक ओर वर्षा का जल एकत्र हुआ, वहीं आस–पास के क्षेत्रों का भू–जल स्तर भी लगभग 10 फीट तक ऊपर आ गया। पानी उपलब्ध होने पर बंजर भूमि पर इस वर्ष पहली बार 40 है0 बंजर भूमि में आलू की खेती तथा अन्य क्षेत्रों में सरसों की अच्छी फसल उत्पन्न हुई। इन खेतों में अधिकतर खेत अनुसूचित जाति एवं पट्टेदार कृषकों के हैं। कृषकों द्वारा और अधिक क्षेत्र में जल संचयी बाँध बनवाने की निरन्तर माँग की जा रही है।

पी.एम.जी.एस.वाई. अन्तर्गत स्पेशल प्रोजेक्ट स्वीकृत

पी.एम.जी.एस.वाई. का लोगो।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ग्रामीण आबादी को पक्के सम्पर्क मार्गो से जोड़ने की महत्वपूर्ण योजना है। योजनान्तर्गत फेज–5 में स्वीकृत कार्य प्रारम्भ होने जा रहे हैं। भारत सरकार ने पहली बार ग्रामीण बसावटों के स्थान पर ऐसे मुख्य मार्गो के चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण कराने की स्पेशल पैकेज की अनुमति इस योजनान्तर्गत प्रदान की है जिनकी चौड़ाई 3.00 मी0 एवं उन पर ट्रैफिक भी काफी अधिक था। अधिक ट्रैफिक होने एवं चौड़ाई कम होने के कारण वाहनों को काफी कठिनाई रहती थी तथा कभी–कभी दुर्घटनाऐं भी होती रहती थीं। सड़कों पर अधिक ट्रैफिक लोड होने के कारण यह जल्दी क्षतिग्रस्त भी हो जाती थीं। भारत सरकार ने मुख्य मार्गों की चौड़ाई 3.00 मी0 3.70 मी0 तक बढ़ाने एवं 2 कोट पत्थर डालकर सड़कों के सुदृढ़ीकरण कराने तथा हाटमिक्स प्लांट से पी.सी. कराने के लिये 2244.68 लाख रू की स्वीकृति प्रदान कर दी है। इन मार्गों के निर्माण के लिए टेन्डर आमंत्रित किये जा चुके हैं शीघ्र ही कार्य प्रारम्भ हो जायेगा। इन मार्गों की एक विशेष बात यह भी होगी कि इनके बीच में पड़ने वालों ग्रामों में यथा सम्भव सी.सी. से सड़क निर्मित कराई जायेगी।

कार्यों की सूची निम्नप्रकार है।

विकास खण्ड	मार्ग का नाम	लम्बाई (कि.मी.)	लागत (ला.रू.)
एत्मादपुर	एत्मादपुर से बरहन	11.00	207.49
खन्दौली	खन्दौली से ऑवलखेडा	14.00	282.17
बाह	बाह से कैन्जरा	12.00	273.67
अकोला	सी.ए.टी.के.मार्ग से जारूआ कटरा	09.00	181.25
बाह	पुरा कनेरा से बासौनी जे.घाट	11.85	253.62
फतेहाबाद	ए.बी.के. रोड से प्रतापपुरा ईधौन	16.45	307.01
शमसाबाद	ए.एस.आर.रोड (सिकतरा)से ए.बी.के.(धमौटा)	9.675	202.21
जैतपुर कलॉ	नौगवॉ से मलिया खेडा विजय नगर	14.25	318.28
फतेहपुर सीकरी	फ.सीकार मार्ग से ढिडवार	12.175	218.98
	योग	110.40	2244.00

ग्राम सरसा विकास खण्ड फतेहपुर सीकरी में पेयजल कार्य

ग्राम सरसा में पेयजल आपूर्ति हेतु एक सबमर्सिबल पम्प की स्थापना, जेनरेटर रूप निर्माण, पाईप लाईन बिछाई कार्य का प्रस्ताव, क्षेत्र पंचायत की बैठक दिनांक 04–05–2006 में ध्वनिमत से पारित हुआ। इस ग्राम के आधे हिस्से में जल आपूर्ति हेतु कोई व्यवस्था नहीं थी। शेष आधा गाँव एक अल्प डिस्चार्ज वाले कुऐं से पानी प्राप्त कर रहा था। यह कुआँ गाँव से लगभग आधा कि0मी0 दूर था। पानी की अत्यधिक कमी के कारण महिलाऐं रात्रि में ही कुऐं पर पानी लाने हेतु एकत्रित होने लगती थीं।

सम्पूर्ण ग्रामीण रोज़गार योजना में प्रस्तुत कार्य में गाँव से लगभग 800 मी0 दूरी पर मीठे पानी की बोरिंग कराते हुए सबमर्सिबल पम्प स्थापित की गयी तथा जैनरेटर के लिए एक कक्ष निर्माण किया गया। राईज़िंग मेन की लम्बाई 800 मी0 तथा डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम की लम्बाई 1200 मी0 तैयार की गयी है। योजना के अन्तर्गत 25 स्टैण्ड दिये गये हैं। योजना की कुल लागत रू0 3.88 लाख रू0 है। इस योजना के पूर्ण होने के उपरान्त इस ग्राम के लगभग 125 परिवार पूर्ण रूप से लाभान्वित हो रहे हैं। योजना के संचालन एवं रख–रखाव हेतु 50 रू0 प्रति परिवार प्रति माह चन्दा के रूप में एकत्रित किये जाते हैं।

इस योजना का संचालन एवं रख–रखाव पेयजल समिति सरसा द्वारा किया जा रहा है। समिति द्वारा योजना का विस्तार करते हुए घरों में लगभग 100 कनैक्शन दे दिये गये हैं। उपभोक्ताओं को सुबह–शाम नियमित प्रचुर मात्रा में मीठा जल उपलब्ध हो रहा है। सभी ग्रामीण विशेषकर महिलाऐं योजना से अत्यधिक खुश हैं। फतेहपुर सीकरी क्षेत्र में पानी की अत्यधिक परेशानी को ध्यान में रखते हुए यह योजना ग्राम के लिए वरदान साबित हो रही है।

निर्मित जैनरेटर रूम।

(पृष्ठ 1 का शेष)

लगातार सम्पन्न होते.............

क्लब पर आयोजित हो रहा है जिसमें भाग लेने के लिए इन्द्रा स्वंय सहायता समूह एवं लक्ष्मी स्वंय सहायता समूह नगला पद्मा जो चप्पल बनाने का कार्य करता है, के 2 स्वरोज़गारी लखनऊ गये हुए हैं।

दिनांक 18.02.2007 से दिनांक 28.02.2007 तक आगरा में आयोजित ताज महोत्सव में भी ओम शिव स्वंय सहायता समूह बमरौली अहीर द्वारा पोलिथिन से तैयार मूर्तियाँ, जय भोले भण्डारी स्वंय सहायता समूह बीसलपुर द्वारा पत्थर के खिलौने एवं हरिओम स्वंय सहायता समूह नगला मुक्ता, फतेहाबाद द्वारा चमड़े के सामानों की बिक्री की जा रही है। इन मेलों के आयोजन से स्वंय सहायता समूहों को अत्यधिक लाभ हो रहा है तथा मेले में जाने के लिए इनमें आपस में होड़ लगी हुई है।

स्वंय सहायता समूह बना रहे हैं पायल

दुर्गा स्वंय सहायता समूह नगला खेमा (श्यामों) विकास खण्ड बरौली अहीर में कार्यरत् है। यह समूह 07–08–2003 को गठित हुआ। दिनांक 11–12–2004 को इसकी प्रथम ग्रेडिंग एवं 28–09–2006 को इसको 2.55 लाख रू0 का ऋण स्वीकृत हुआ, जिसमें 1.20 लाख रू0 का अनुदान भी सम्मिलित है। श्री प्रेमसिंह समूह के अध्यक्ष एवं श्री ओम प्रकाश समूह के कोषाध्यक्ष हैं। यह समूह पायल बनाने का कार्य करता है। पायल बनाने में कई मशीनें प्रयुक्त होतीं हैं जिन्हें इस समूह ने क्रय कर ली हैं। बाज़ार से तार ख़रीद कर एक मशीन पर इसकी कटाई होती है, एक अन्य मशीन पर उसे घुँघरू का रूप दिया जाता है। बैल्डिंग मशीन से घुँघरू के टाँके को जोड़ा जाता है। अन्त में कच्चे माल ज़ंजीर में घुँघरू जोड़कर पायल तैयार की जाती है। समूह के समस्त सदस्यों ने अलग–अलग कार्य स्वंय के लिए निर्धारित कर रखा है।

पायल बनाती समूह के परिवार की सदस्य।

समूह के सदस्यों के साथ उनके परिवार की महिलाऐं एवं बच्चे भी उनके कार्य में पूर्ण सहयोग देते हैं एवं खाली समय में वह भी इस कार्य को सम्पादित करते रहते हैं।

आगरा के बाज़ार में इन पायलों की अच्छी माँग है जिसके कारण यह हाथों हाथ बिक भी जाती हैं। समूह का प्रत्येक सदस्य औसतन प्रतिदिन 100 रू0 की आय कर रहा है।

सम्पादक : अख्तर मसूद, सहायक अभियन्ता, डी.आर.डी.ए., आगरा
सहयोगी : जुगेन्द्र पाठक, कम्प्यूटर प्रोग्रामर, डी.आर.डी.ए. आगरा
मुख्य सम्पादक : आर.पी. सिंह, परियोजना निदेशक, डी.आर.डी.ए., आगरा
संरक्षक : एस.के. सिंह मुख्य विकास अधिकारी/अधिशासी निदेशक, डी.आर.डी.ए. आगरा
जिला ग्राम्य विकास अभिकरण, आगरा द्वारा प्रकाशित तथा शुभम मीडिया पब्लिकेशन, एम.जी. रोड, कलैक्ट्रेट, आगरा फोन : 0562–2391515 द्वारा मुद्रित

ग्रामीण भारत से सम्बन्धित सुझाव निम्न पते पर प्रस्तुत कर सकते हैं
परियोजना निदेशक
जिला ग्राम्य विकास अभिकरण, विकास भवन, संजय प्लेस, आगरा
फोन : 0562-2850094 e-mail : drda_agr@hubnic.in